VISION IAS

www.visionias.in

30 DEC 2020

SUBJECT:	ESSAY	Test Code:	1	4	5	8

Name of Candidate	Girdhari							
Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number	3	3	0	8	1	0
Center	MN, DELHI	Date	3	0	1	2	2	0

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न-पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Content Competence**
3. **Language Competence**
4. **Introduction Competence**
5. **Structure - Presentation Competence**
6. **Conclusion Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

Section-A

③ "लोकतंत्र में, हमें वे नेता मिलते हैं जिनके हम पात्र होते हैं।"

" देश A में समतामूलक आर्थिक विकास, महिलाओं का सम्मान तथा नैतिक शिक्षा युक्त समाज उपस्थित हैं। इस समाज में मानवीय अधिकारों का सम्मान किया जाता हैं।

देश B में कुछ लोगों के पास ही शक्तियों व सम्पत्ति का केन्द्रीयकरण हैं। मानवीय मूल्यों की कमी के कारण दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति अस्पताल ही नहीं पहुँच पाता तथा वहाँ शस्त्रों का प्रयोग आम बात हैं।"

ये दो परिस्थितियाँ, हमें दो व्यवस्थाओं व समाजों की सूचना देते हैं। यदि इनमें चुनाव करवाया जाये और प्रतिनिधि चुना जाये तो इसकी पर्याप्त सम्भावना है कि देश A में सबको साथ लेने वाले तथा नैतिक गुणों से युक्त नेतृत्व का चुनाव हो। दूसरी तरफ देश B में चुनाव होने पर सम्भावना है कि कोई बाहुबली ही नेता बन जाये तथा समाज का नेतृत्व करे। उपरोक्त दोनों दृष्टांत शीर्षक को सिद्ध करते हैं कि "लोकतंत्र में, हमें वे नेता मिलते हैं जिनके हम पात्र होते हैं।"

विस्तृत चर्चा से पूर्व यह जान लेना आवश्यक हैं कि लोकतंत्र क्या हैं? सीधे शब्दों में बात करे तो "लोकतंत्र, जनता का, जनता के द्वारा व जनता के लिए किया गया शासन है।" लोकतंत्र लोगों व व्यवस्था के मध्य विद्यमान अंतराल को कम करता हैं तथा समावेशी शासन की स्थापना करता हैं।

लोकतंत्र में हमें वे नेता क्यों मिलते हैं, जिनके हम पात्र हैं। वस्तुतः लोकतंत्र भी समाज का ही दर्पण होता हैं। नेताओं का उदय समाज के अंदर से ही होता हैं। इस कारण उदय की परिस्थितियाँ व उदय के कारण लोकतांत्रिक नेतृत्व व समाज के मध्य समन्वय स्थापित करवाते हैं। लोगों की इच्छाओं को अभिव्यक्त करने वाला ही आगे आता हैं।

साथ ही नेतृत्व द्वारा समाज के मूल्यों को अभिव्यक्त किया जाता हैं। इस कारण समतामूलक व विषमतामूलक समाज में भी क्रमशः नेतृत्व अलग-अलग होगा। इस तरह हम (समाज) व लोकतंत्र के नेताओं में समन्वय दिखाई देता हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

लोकतांत्रिक प्रणाली भी हमारे हितों के आधार पर ही निर्मित होती हैं। इस कारण हमारे हितों (अच्छे या बुरे) को अभिव्यक्त करने वाले नेता ही चुने जाते हैं। लोकतंत्र में हमें अब्राहम लिंकन जैसे नेता भी मिलते हैं जिन्होंने सामाजिक- आर्थिक विषमता की समाप्ति, राष्ट्र की क्षमता का उपयोग कर उच्च संवृद्धि के साथ- साथ समावेशी लोकतंत्र का निर्माण किया।

दूसरी तरफ लोकतंत्र व गणतंत्र का दुरुपयोग कर सामने आये, हिटलर तथा मुसोलिनी ने उस समाज की पात्रता को सिद्ध किया। वस्तुत: उस समय का समाज परिवर्तन चाहता था और इन नेताओं द्वारा उनकी चाह को नीतियों में परिवर्तित किया।

प्रशासन में भी हमारी पात्रता के आधार पर नेतृत्व देखा जा सकता हैं। भारतीय समाज नैतिक मूल्यों व विकास को लेकर द्वन्द्व की दशा में हैं। इस कारण एक तरफ जन केन्द्रित व समावेशी प्रशासक मिलते हैं तो दूसरी तरफ भ्रष्टाचार व लालफीताशाही व अनैतिक कार्यों का बोलबाला हैं। इस तरह लोकतंत्र में प्रशासन भी हमारी पात्रता की

ही परिणति दिखाई देता है।

समाज के अंदर भी हमें वैसे ही नेता मिलते हैं, जिनके हम पात्र होते हैं। हमें महात्मा गांधी मिल सकते हैं जो नैतिक चरित्र, पर्यावरण संरक्षण व साधन- साध्य की पवित्रता की बात करते हैं। साथ ही संघर्षरत व आंतरिक व बाह्य चुनौतियों से लड़ रहे समाज को ओसामा बिन लादेन मिल सकता है। वस्तुतः समाज की दशा से ही नेतृत्व का उदय व विकास होता है तथा वह आगे बढ़ता है।

समाज के साथ-साथ दार्शनिक, बौद्धिक, पर्यावरणीय व सांस्कृतिक क्षेत्र में, लोकतंत्र के तहत वैसा ही नेतृत्व मिलता है जिसके हम हकदार होते हैं। राज्य की शक्ति पर बल देने वाले हीगलवादी चिंतन के साथ-साथ राज्य की न्यूनतम शक्ति के समर्थक गांधीजी का उदय भी, लोकतंत्र में लोगों की इच्छा व पात्रता का परिणाम है। पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में ~~बाबा~~ बाबा आम्टे तथा सुन्दरलाल बहुगुणा का नेतृत्व भी भारतीय समाज की पात्रता का सूचक है।

उपरोक्त उदाहरण बताते हैं कि "लोकतंत्र में, हमें वे नेता मिलते हैं जिनके हम पात्र होते हैं।" इसका सबूत परिवार में नेतृत्व से लेकर राष्ट्र के नेतृत्व तक देखा जा सकता हैं। परिवार में जिस प्रकार के गुणों का विकास होगा, नेतृत्व भी उसी प्रकार का होगा। नेतृत्व विकास की यह प्रक्रिया अनवरत जारी रहती हैं तथा हमारी पात्रता के आधार पर नेतृत्व का विकास होता हैं।

यदि समाज बुरा होगा तथा समाज के बुरेपन से विकास के अन्य आयाम भी प्रभावित होते हैं तो नेतृत्व भी समाज की पात्रता के आकार पर विकसित होता हैं। इस आधार पर विश्व में बुरे समाज के कारण बुरा नेतृत्व सामने आता हैं। इस कारण विश्व के कुछ क्षेत्रों में अशांति का माहौल बना रहता हैं। तो दूसरी तरफ यदि हम पात्र होते हैं तो हमें नेतृत्व भी पात्र ही प्राप्त होगा तथा इस कारण राष्ट्र के विकास के साथ-साथ विश्व का भी समावेशी विकास होगा।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

लेकिन यह सदैव सत्य नहीं कि लोकतंत्र में नेतृत्व हमें हमारी पात्रता के हिसाब से ही प्राप्त हो। समाज के अधिक पात्र होने के बावजूद खराब नेतृत्व मिल जाता है तो दूसरी तरफ पात्र न होने पर भी समाज को अच्छा नेतृत्व मिल सकता है। इस तरह लोकतांत्रिक नेतृत्व व लोगों की पात्रता में असंगति देखी जा सकती है।

माना जाता है कि एथेंस का समाज शोषणमूलक था तथा वहाँ मानवों को दास बनाकर रखा जाता था लेकिन एथेंस के लोकतंत्र ने स्थिति को परिवर्तित किया। इसी तरह दूसरी तरफ 600 ईसा पूर्व का भारतीय समाज सामाजिक-आर्थिक विषमता के साथ-साथ अगुंलिमाल जैसे डकैतों के प्रभाव से युक्त था लेकिन उस समय महात्मा बुद्ध का उदय हुआ। इनके समाज व धर्म सुधार के प्रयासों के माध्यम से समाज को पात्र बनाने का कार्य किया गया। वस्तुतः जब नेतृत्व अच्छा मिल जाता है तो वह समाज से परिवर्तित होने के बजाय

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

समाज को ही परिवर्तित करता हैं।

इसी तरह कुछ उदाहरण मौजूद हैं जहाँ पात्रता के आधार पर नेतृत्व का विकास नहीं हुआ। औपनिवेशिक शोषणकालीन छद्म लोकतंत्र के समय भारतीय समाज पात्र था लेकिन नेतृत्व ब्रिटिश हितों से प्रेरित होकर कार्य कर रहा था। इस कारण समाज की पात्रता व नेतृत्व मे संतुलन के बजाय विषमता व अंतराल अधिक दिखाई देता हैं।

वस्तुतः लोभ-लालच के कारण नेतृत्व समाज के हितों व पात्रता के आधार पर कार्य नहीं करता। आतंक के शासन के समय फ्रांस में रोबेस्पियर द्वारा सामान्य इच्छा (समाज की पात्रता) का उल्लंघन किया तथा तानाशाही की स्थापना की। इस तरह कई कारणों से यह असंगति देखी जा सकती हैं।

यह असंगति राजनीतिक व प्रशासनिक क्षेत्र के साथ-साथ ~~बाज~~ आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक व बौद्धिक क्षेत्र में भी

देखी जा सकती हैं। वर्तमान विश्व में जहाँ मानवतावाद, पर्यावरण प्रदूषण व जलवायु परिवर्तन के दौर में मानवीय अस्तित्व संकट में हैं तथा परस्पर सहयोग के लिए पात्र भी हैं, नेतृत्व के स्तर पर इससे असंगति देखी जा सकती हैं।

वर्तमान नेतृत्व लोगों की इच्छाओं व पात्रता के बावजूद सामाजिक-आर्थिक शोषण व दमन का कार्य कर रहा हैं। अनियंत्रित विकास के कारण ऐसे नेतृत्व का अभाव हैं जो लोगों की इच्छाओं व पात्रता का सम्मान करें।

चर्चा का अगला पक्ष यह है कि समाज को पात्र बनाकर लोकतंत्र में अच्छा नेतृत्व कैसे प्राप्त किया जाये। वस्तुतः वर्तमान संरक्षणवाद तथा मानवीय शोषण के युग में संघर्ष से बचाने के लिए नैतिक नेतृत्व की आवश्यकता हैं।

इसके लिए समाज व लोकतंत्र में सुधार आवश्यक हैं। लोकतंत्र में सुधार के लिए सम्बद्ध हितधारक, प्रणाली व तकनीकी क्षेत्र में सुधार आवश्यक हैं। बाहुबलियों के बजाय समाज के हितैषी लोगों

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

का निर्वाचन होना आवश्यक है। साथ ही लोकतांत्रिक प्रणाली को समावेशी होना चाहिए। जन केन्द्रित व पारदर्शी प्रशासन के लिए भी प्रशासनिक प्रणाली में सुधार किया जाना चाहिए। लोकतांत्रिक संस्थाओं में सुधार के माध्यम से समाज के पात्र लोगों को ही आगे लाया जाना चाहिए।

इसके साथ ही समाज में सुधार आवश्यक है ताकि समाज को कुशल नेतृत्व की प्राप्ति के योग्य बनाया जा सके। इसके लिए उचित व नैतिक समाजीकरण पर बल दिया जाना चाहिए। साथ ही मानवतावाद, 'मैं' की बजाय 'हम' तथा सहयोग व शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर आधारित समाजीकरण की आवश्यकता है। नैतिक शिक्षा के माध्यम से नैतिक चरित्र का विकास हो जो प्रत्येक व्यक्ति का महत्व, 1 व्यक्ति के बराबर, सिद्ध करे।

इस तरह समाज की पात्रता व लोकतांत्रिक ~~विसंगति~~ नेतृत्व में विद्यमान विसंगति को दूर करने के लिए समाज व व्यवस्था, दोनों स्तर पर परिवर्तन किया जाना चाहिए। समाज व

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

व्यवस्था को नैतिक स्वरूप दिया जाना चाहिए। साथ ही संविधान की प्रस्तावना में उल्लेखित "हम, भारत के लोग" को वरीयता दी जानी चाहिए।

सार रूप में कहे तो सामान्यत: सामान्यत: समाज व व्यवस्था की पात्रता ही हमारे लोकतांत्रिक नेतृत्व का निर्धारण करती हैं। यद्यपि इसमें उत्पन्न अंतर का समाधान समावेशी रूप से किया जाना चाहिए तथा समाज की पात्रता व लोकतांत्रिक नेतृत्व का सुचक्र स्थापित कर, विकास की सुव्यवस्थित प्रक्रिया स्थापित की जानी चाहिए। समाज व लोकतंत्र एक दूसरे के प्रतिबिम्ब हैं और इनमें साम्यता के लिए व्यक्ति से लेकर सम्पूर्ण व्यवस्था को नैतिक व समावेशी बनाकर, लोकतंत्र की मूल भावना को स्थापित किया जाना आवश्यक हैं।

"शिक्षा, समीक्षा व निरंतर विकास से हमें समाज की पात्रता व लोकतांत्रिक नेतृत्व की उचितता सिद्ध कर सकते हैं जो नई सदी के नए लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं।"

———×———×———×———

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Section - B

(8.) "भारत में पर्यटन : एक संभावित गेम चेंजर"

" श्याम ट्रेन व अन्य परिवहन साधनों के माध्यम से सम्पूर्ण भारत का भ्रमण करता हैं। इस दौरान वह कश्मीर की पश्मीना शॉल से लेकर नागालैण्ड व केरल के वस्त्रों को खरीदता हैं साथ ही वहाँ की जीवन शैली व रहन-सहन से कुछ तत्वों को सीखता हैं। श्याम अलग-अलग राज्यों के इतिहास व वर्तमान व्यवस्था से बहुत कुछ सीखता हैं तथा भारत भ्रमण को पूरा करता है।"

इस प्रसंग मे श्याम एक पर्यटक की हैसियत से आता हैं लेकिन वह भारत की सम्पूर्ण व्यवस्था को प्रभावित करता हैं। परिवहन साधनों से लेकर, महिला सशक्तिकरण से सम्बन्धित हस्तशिल्पों का विकास होता हैं। जीवन शैली में नवीन तत्वों का समावेश होता हैं। इस तरह पर्यटन एक व्यक्ति, समाज व व्यवस्था को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, साँस्कृतिक व वैचारिक दृष्टिकोण से प्रभावित करता हैं। इसी कारण "भारत में पर्यटन : एक सम्भावित गेम चेंजर" की भूमिका निभा सकता हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

पर्यटन केवल एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण ही नहीं हैं। पर्यटन विभिन्न व्यवस्थाओं के बीच तुलना हैं। पर्यटन एक जीवन में कई जीवन शैलियों को जीने की कला हैं। पर्यटन अर्थव्यवस्था से लेकर समाज व व्यक्ति को जानने की विधा हैं। विश्व ट्रेवल एवं टूरिज्म सूचकांक के अनुसार "पर्यटन विदेशी मुद्रा की प्राप्ति, अवसंरचना विकास, सांस्कृतिक विसरण से लेकर विश्व में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को आगे बढ़ाता हैं।"

भारत में पर्यटन की विशाल सम्भावना हैं। भारत की विविधता ही इसकी प्रमुख सम्पत्ति हैं। भौगोलिक विविधता के तहत थार का रेगिस्तान, द्वीप व हिमालय पर्वत माला शामिल हैं। भारत में सभ्यता के उद्भव के प्रारम्भिक स्थानों से लेकर मानवीय विकास के अन्य स्थान भी देखे जा सकते हैं। ऐतिहासिक स्मारकों के साथ-साथ अमूर्त सांस्कृतिक विरासत भी भारतीय पर्यटन के प्रमुख गंतव्य स्थान हैं। भारतीय लोगों की जीवन शैली भी विविधता से युक्त हैं।

इसी विविधता के कारण भारत

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

में पर्यटन की विशाल सम्भावना विद्यमान हैं। सरकारों द्वारा समय-समय पर विभिन्न प्रयासों के माध्यम से इस सम्भावना को आगे बढ़ाया जा रहा हैं। वैश्वीकरण के कारण पर्यटन अब गेम चेंजर की भूमिका में आ गया हैं।

पर्यटन अपनी गेम चेंजर की भूमिका कई क्षेत्रों में निभा सकता हैं। विश्व आर्थिक मंच के अनुसार पर्यटन से समावेशी व सतत अर्थव्यवस्था का विकास होता हैं। रोजगार की पर्याप्त सम्भावना के साथ-साथ पर्यटन विकास से अवसंरचना विकास व कनेक्टिविटी को भी बढ़ावा मिलेगा। साथ ही हस्तशिल्पों के पुनः विकास से महिला सशक्तिकरण के माध्यम से समावेशी विकास होगा। विदेशी मुद्रा का प्रयोग पर्यटन का और अधिक विकास करने के लिए किया जा सकता हैं।

साथ ही पर्यटन आर्थिक विकास के माध्यम से अन्य क्षेत्रों को भी प्रभावित करेगा। रोजगार के कारण जीवन शैली के स्तर में परिवर्तन होगा तथा सामाजिक क्षेत्र में (शिक्षा, स्वास्थ्य) में व्यक्तिगत व्यय बढ़ेगा। इस तरह शिक्षा के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

विकास से कौशल विकास व सम्भावनाओं का दोहन करने वाला कार्यबल विकसित होगा। इस तरह पर्यटन : एक सम्भावित गेम चेंजर के रूप में नज़र आता है।

पर्यटन से सामाजिक- आर्थिक विषमता कम होगी तथा गाँधीजी के सर्वोदय के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा। साथ ही वैश्विक सकारात्मक सामाजिक सिद्धांतों को भारतीय समाज में लागू किया जा सकेगा। इससे मानवतावाद व महिला सशक्तिकरण के प्रति चेतना का निर्माण होगा। इसी तरह पर्यटन से रहन- सहन व जीवन स्तर में भी परिवर्तन आयेगा। विश्व संस्कृतियों के एकीकरण से विश्व नगरवाद का विकास होगा। साथ ही पर्यटन के द्वारा मानव का भी समावेशी विकास हो सकता है।

"पर्यटन के बिना जीवन, किसी पुस्तक के केवल पहले पृष्ठ को जानने जैसा है। जीवन की पुस्तक को पूरा करने के लिए पर्यटन आवश्यक है।"

पर्यटन के कारण राजनीतिक व अंतर्राष्ट्रीय संबंध भी प्रभावित होते हैं। भारत

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

की सॉफ्टपॉवर का विकास पर्यटन के कारण ही हुआ हैं तथा वर्तमान में भारत को इसका लाभ मिल रहा हैं। पर्यटन से विषमताओं में कमी आती हैं तथा समावेशन की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलता हैं। इस कारण राजनीतिक स्थायित्व सामने आता हैं। अंकटॉड के अनुसार "संकट ग्रस्त व संघर्षरत मध्य एशिया व पाश्चिमी एशिया के विकास के लिए पर्यटन एक सम्भावित गेम चेंजर हो सकता हैं। इन क्षेत्रों में पर्यटन की विशाल सम्भावना भी हैं।"

साथ ही पर्यटन भारत को वैचारिक व बौद्धिक रूप से भी प्रभावित करेगा। इस कारण प्राचीन भारतीय ज्ञान का महत्व पुनः बढ़ेगा तथा "नवीन भारत का जुड़ाव प्राचीन भारत से हो जायेगा।" पर्यटन से समन्वित व्यक्तित्व सामने आयेगा जो जनांकिकीय लाभांश का दोहन करने के लिए आवश्यक हैं। समन्वित व्यक्तित्व का प्रभाव समाज, अर्थव्यवस्था व वैश्विक नैतिकता पर होगा। इस कारण विश्व की वर्तमान संरक्षणवादी भावना के बजाय सहयोग व साहचर्य की भावना को बढ़ावा मिलेगा।

इस तरह भारत में पर्यटन एक सम्भावित गेम चेंजर की भूमिका में हैं। यह भारत व भारतीय समाज, व्यवस्था को बहुआयामी रूप से प्रभावित करेगा।

यद्यपि पर्यटन के गेम चेंजर बनने में कई बाधायें विद्यमान हैं। सर्वप्रमुख बाधा अवसंरचना की हैं। गांवों से कनेक्टिविटी का अभाव होने के कारण कृषि पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन व ईको पर्यटन की सम्भावना का दोहन नहीं किया जा सका हैं। नीति आयोग की रिपोर्ट में भारतीय पर्यटन व अवसंरचना संबंधी बाधा, के संबंधों को बताया गया हैं।

साथ ही भारतीय पर्यटन के विकास में टॉप डाउन दृष्टिकोण (केन्द्रिकृत धारणा) के कारण भी कई बाधायें हैं। केरल, कश्मीर व अरुणाचल की पर्यटन सम्भावनाओं के लिए एक ही प्रकार की नीति का निर्माण किया गया है। पर्यटन संबंधी नीति व गतिविधियों में आम जनता की सक्रिय भागीदारी न होने के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कारण भी पर्यटन विकास की योजनाएँ ज्यादा प्रासंगिक नहीं रह पाती। साथ ही केन्द्रीयकृत धारणा के कारण महानगरों के पर्यटन स्थलों का ही विकास हुआ हैं तथा दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों की पर्यटन सम्भावना का उपयोग नहीं किया जायेगा।

अभी तक भारतीय पर्यटन उद्योग में सरकारी क्षेत्र ही प्रभावी था। इस कारण विश्व के केवल 1.18 % पर्यटक ही भारत आते हैं। सरकारी क्षेत्र की अधिक भूमिका के कारण नीतिगत जड़ता व अवसंरचना विकास में बाधा का सामना करना पड़ रहा हैं।

साथ ही भारत की पर्यटन ~~स्थ~~ सम्भावनाओं का संरक्षण के अभाव में ~~क्षरe~~ क्षरण हो रहा हैं। यह केवल पर्यटन स्थलों का ह्रास नहीं हैं बल्कि यह भारतीय संस्कृति व जीवन शैली का भी क्षरण हैं। इस तरह अनियंत्रित पर्यटन के कारण पर्यटन स्थलों पर दबाव सामने आ रहा हैं। बढ़ते संरक्षणवाद व जलवायु परिवर्तन के कारण पर्यटन उद्योग

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

नकारात्मक रूप से प्रभावित हो रहा हैं। पर्यटन मंत्रालय द्वारा इन सभी समस्याओं व चुनौतियों को उजागर किया हैं।

इन समस्याओं व चुनौतियों का सामना करने के लिए केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा कार्य किया जा रहा हैं। निजी क्षेत्र की भागीदारी से अडोप्ट ए हेरिटेज परियोजना के माध्यम से अवसंरचना का विकास किया जा रहा हैं। पर्यटन मंत्रालय द्वारा पर्यटन पर्व का आयोजन किया जा रहा हैं जो पर्यटन की सम्भावनाओं के बारे में लोगों को बताता हैं। इसी तरह "एक भारत - श्रेष्ठ भारत" नामक पहल भी भारत के सामाजिक व सांस्कृतिक एकीकरण के माध्यम से पर्यटन सम्भावनाओं को आगे ला रही हैं।

राष्ट्रीय पर्यटन नीति भी पर्यटन को एकीकृत रूप से विकास इंजन बनाने का प्रस्ताव रखती हैं। साथ ही स्वदेश दर्शन योजना के माध्यम से विभिन्न सर्किटों का निर्माण कर पर्यटन गतिविधियों को विविधता

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

दी जा रही हैं। साथ ही प्रसाद व अमृत योजना भी अवसंरचना विकास के माध्यम से धार्मिक व सांस्कृतिक पर्यटन को आगे बढ़ा रही हैं।

पर्यटन क्षेत्र में निजी क्षेत्र को अग्रणी भूमिका दी जा रही हैं। निजी क्षेत्र अवसंरचना विकास, भारतीय पर्यटन की ब्रॉडिंग का कार्य कर रहा हैं। साथ ही ई-वीजा, देखो अपना देश, अतुल्य भारत 2.0 जैसी योजनाओं का निर्माण किया गया। राज्यों के स्तर पर केरल, राजस्थान व कश्मीर में पर्यटन का कार्य किया जा रहा हैं।

इन सब उपायों से पर्यटन को बढ़ावा मिला हैं तथा अवसंरचना निवेश बढ़ा हैं। यद्यपि अभी और अधिक समन्वित प्रयासों की आवश्यकता हैं। पर्यटन को विकेन्द्रीकृत रूप दिया जाना चाहिए तथा लोगों को पर्यटन विकास की प्रक्रिया में शामिल किया जाना चाहिए। क्लस्टर आधारित दृष्टिकोण के माध्यम से ग्रामीण पर्यटन का विकास किया जाना चाहिए।

एक समन्वित पर्यटन नीति की आवश्यकता है जो पर्यटन को समावेशी रूप प्रदान करने के साथ-साथ पर्यटन के नये स्वरूपों पर भी ध्यान दे। ICT का पर्यटन क्षेत्र में प्रयोग किया जाना चाहिए। निजी क्षेत्र की भूमिका को स्पष्ट कर अवसंरचना विकास किया जाना चाहिए।

साथ ही पर्यटन शिक्षा व कौशल विकास के माध्यम से मानव संसाधन का सृजन किया जाना आवश्यक हैं। पर्यटन सतत हो जो जलवायु परिवर्तन प्रत्यास्थ भी हो। साथ ही संविधान की मूल भावना को जागृत कर, पर्यटन स्थलों का विकेन्द्रिकृत दृष्टिकोण के आधार पर संरक्षण किया जाना आवश्यक हैं।

पर्यटन की सम्भावनाओं से उचित लाभ लेने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग भी आवश्यक हैं तथा अंकटाड, विश्व आर्थिक मंच तथा अन्य संगठनों के साथ सहयोग के माध्यम से पर्यटन क्रियाओं का विकास किया जाना चाहिए। पर्यटन उद्योग को केवल आर्थिक पक्ष तक ही सीमित न रखकर इसकी

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

सम्भावनाओं तथा क्षेत्रों को व्यापक रूप दिया जाना आवश्यक हैं।

इस तरह पर्यटन को सम्भावित गेम चेंजर बनाने के लिए बहुआयामी व एकीकृत रणनीति की आवश्यकता हैं। इस रणनीति में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के साथ-साथ जमीनी स्तर पर विभिन्न समुदायों की भी प्रभावी भूमिका हो। स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं को सशक्त कर उचित भागीदारी बनाया जाना चाहिए। निजी क्षेत्र की भी प्रभावी भूमिका हो तथा सभी पक्षों व सम्भावनाओं तथा कटिंग ऐज प्रौद्योगिकी का प्रयोग भी पर्यटन के विकास में किया जाना आवश्यक हैं।

"भारत में पर्यटन की अपार सम्भावनाऐं हैं। उचित रणनीति से पर्यटन सामाजिक व आर्थिक विकास का प्रभावी मॉडल बन सकता हैं। इससे सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में आसानी होगी।"

नीति आयोग @75 रिपोर्ट

—— x —— x ——

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

लोकतंत्र में, हमें वे नेता मिलते हैं जिनके हम पात्र होते हैं।

पक्ष
- → राजनीतिक, प्रशासनिक
- → आर्थिक, पर्यावरणीय, सामाजिक
- → बौद्धिक

① लोकतंत्र क्या है?
② पक्ष — ⊖ ⊕ — ⊖
③ विपक्ष — ⊖ — ⊕

विपक्ष
- → राजनीतिक, प्रशासनिक
- → आर्थिक, पर्यावरणीय, सामाजिक
- → बौद्धिक

लोकतंत्र के नाम पर तानाशाह

① महात्मा गाँधी
② अब्राहम लिंकन
③ वर्तमान में कई नेता
④ एथेंस का लोकतंत्र

① ऐसे नेता क्यों मिलते हैं जिनके हम पात्र
- ↳ उदय का कारण
- → महत्वाकांक्षा
- → नेतृत्व
- → हमारे मूल्यों को अभिव्यक्त करना

② अच्छे नेता कैसे?
- → लोकतंत्र में सुधार
- → समाज में सुधार ताकि हम अच्छे नेता प्राप्त कर सके।

① दो दृष्टांत (शुरूआत)
② समाज ही लोकतंत्र व नेता बनाता है"
③ लोकतंत्र - समाज की ही अभिव्यक्ति है।
④ ADR Report

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

निष्कर्ष

① लोकतंत्र को प्रभावशाली
(जन केंद्रित, जवाबदेह)
नेताओं के लिए अधिक
बालिकाओं, नैतिक मूल्यों
आधारित शिक्षा etc.

गांधीजी → शिक्षा → नई शिक्षा व समाज की बेहतरी के लिए

भारत में पर्यटन – एक सम्भावित गेम चेंजर

① शुरुआत (+ve वाली line से)

② पर्यटन का महत्व → किताब का एक पृष्ठ, पूरी किताब

③ पर्यटन क्या है।

④ भारत में पर्यटन की सम्भावना

⑤ सम्भावित game changer कैसे?
- आर्थिक
  - निवेश
  - अवसंरचना
  - रोजगार
  - हस्तशिल्प
  - VC
- सामाजिक – सांस्कृतिक
- राजनीतिक (soft power)
- बौद्धिक
- वैचारिक

⑥ game changer बनने में बाधा
- बाधाएं
- पहचान, अवसंरचना, संरक्षण

⑦ सरकारी प्रयास – +ve

⑧ क्या किया जाना चाहिए

⑨ Conclusion → समुदाय आधारित, विकास केंद्रित, विकेंद्रीकृत, समावेशी व सुरक्षित पर्यटन जो नये भारत की आवश्यकताओं को पूरा करे नीति आयोग @75